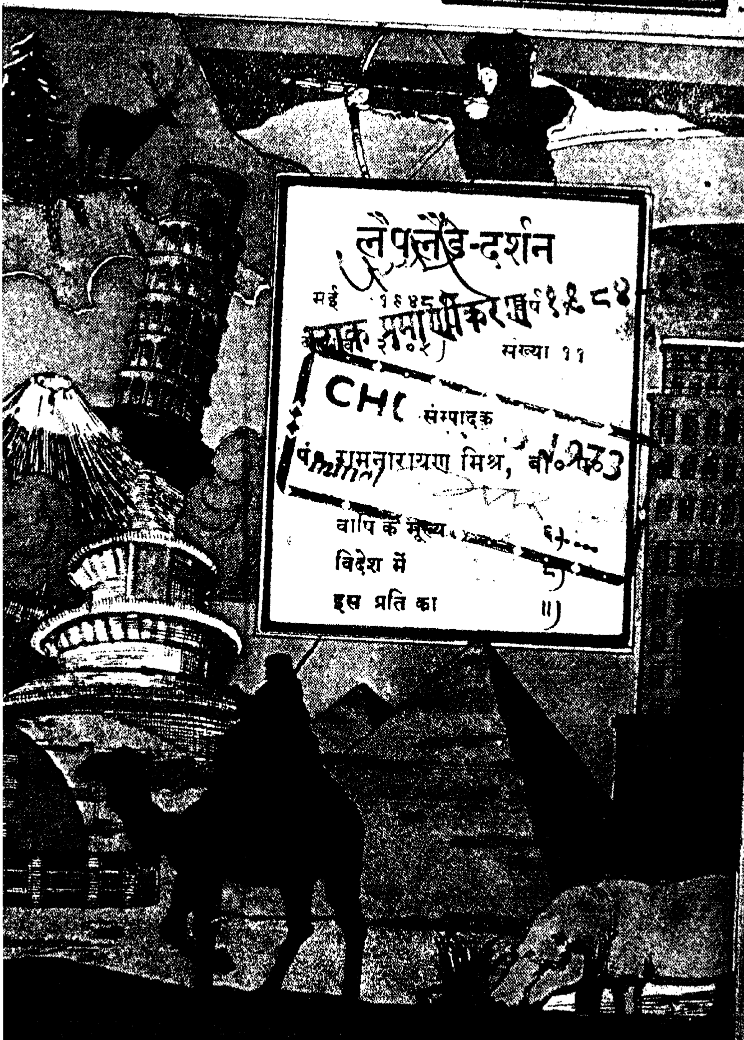
देश दर्शन

पूर्णसंख्या—१००



लैपलैंड-दर्शन

मई १९४५ वर्ष [illegible] संख्या ११

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ६)
विदेश में ८)
इस प्रति का ॥)

लैप लैंड

लैप लैंड की व्याख्या न तो राजनैतिकि दृष्यकोण से की जा सकती है और न भौगोलिक दृष्टिकोण से। आधुनिक समय में लैप लैंड से केवल उस स्थान का संकेत किया जाता है। जहां पर लैप कहलाने वाले पाए जाते हैं। लैप जाति के लोगों को लैप कह कर ही पुकारा जाता है। लैप लैंड कोई स्थान नही है जाहां पर यह लोग निश्चित रूप से रहते हों। लैप्स प्रायः यूरुप के प्रत्येक स्थानों पर पाए जाते हैं। जिस स्थान पर भी इनकी अधिकता होगी उसी स्थान को लैप लैंड कहा जाता है।

पहले समय में लेप लैंड केवल उसी स्थान को कहा जाता था जो केवल कृषो के उपयोग में लाया जाता था। आज कल कृषी लैप लैंड की सीमा से कहीं अधिक बढ़ गई हो अतएव लैप लैंड की कोई निश्चित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती।

देश दर्शन

कुछ शताब्दी पहले लैप्स लोग पहले प्रायः योरूप के दक्षिणी भाग में ही पाए जाते थे। कुछ शतब्दी पहले से यह लोग स्वीडन के प्रान्तों में फिनलैण्ड के जंगलों में और रूस में ओनेगा झील के निकट पाए जाने लगे। परन्तु आजकल इनकी संख्या नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड और रूस में अत्याधिक बढ़ गई है। इस संख्या के बढ़ने का मुख्य कारण सभ्यता का विकास है। ईस सभ्यता ने लोगों के दिमाग को विस्तृत कर दिया। उन्होंने अपनी जीविका की खोज में समस्त योरूप में प्रवेश करना आरम्भ कर दिया।

स्वीडन का लैप लैंड का भाग सात लैप लैंड में विभाजित किया गया है। (१) टार्न लैप मार्क जिसमें कुरेस्वांडो और जुकासजारबी लोग रहते हैं। (२) लूल लैप लैंड—इसमें गलीवेर और जाकमाक लैप्स रहते हैं। (३) पिट लैप लैंड —इसमें अर्जेपलाग और अरविद्स-जोर रहते हैं। (४) उमें लैप लैंड इसमें माना और टरना लैप्स रहते हैं परन्तु अधिकतर सभ्य लैप आजकल असेले लैप मार्कमें जेम्ट लैंड में तथा हरजेनलिन में निवास करते हैं। इन सब लैप लैंड की सीमा अलग

अलग है। कुछ इसमें अत्यंत छोटे हैं। परन्तु कुछ काफी बड़े हैं। सबसे बड़ा लैपलैंड लूल गा है। जिसका क्षेत्र फल हालैंड से कहीं अधिक है। इनकी जन संख्या भी भिन्न भिन्न है। अन्तिम तीन लैप लैंडों की जन संख्या आजकल ४०,००० है जिसमें ४००० लोग लैप्स हैं।

प्रत्येक देशो के लैपो का रहन सहन, चाल ढाल भाषा और आचार विचार भी भिन्न है। फिनलैंड और रूस के लैपो की भाषा और रहन सहन में काफी अंतर है।

आधुनिक समय में योरूप में लगभग ३०,००० लैप पाए जाते हैं। इनमें से १६,००० नार्वे में रहते हैं। ७७,०० स्वीडन में रहते हैं। १६०० फिनलैंड में रहते हैं। और १७०० कोला मायद्वीप में निवास करते हैं।

यह लैप कब इन स्थानो पर आए और यहां पर कबसे निश्चित रूप से रहने लगे यह एक कठिन प्रश्न है जिसका उत्तर आसानी से नही दिया जा सकता यह भी निश्चयरूप से नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने कब से अपने प्राचीन स्थान को छोड़ना आरम्भ किया

अनुमान लगाया जाता है कि फिनलैंड के लैप लोग यूराल पर्वत और वाल्गा नदी के पास से आए हैं। उनके रहन सहन और भाषा को देख कर कुछ विद्वान उनके मँगोल प्रदेश से आने के विचार से सहमत हैं।

कुछ लोगों का कथन है कि लैप लोगों को फिनी यूजरियन लोगों ने हराया था और पराजित करके अपने आधीन कर लिया था। लैपों ने अपने विजेता की भाषा भी सीख ली। यह अनुमान किया जाता है कि इनके विजेता शौड थे। यह लोग फिनलैंड की एक जाति थे जो रूस और फिन लैंड की जातियों में एक दम मिल गये। इसी प्रकार लैपों की उत्तपत्ति के विषय में कई कहानियां प्रचलित हैं। इन कहानियों में जंगली शौड जाति के डाकुओं से लगातार युद्ध का वर्णन है।

लोगों की भाषा भी मिश्रित है जैसा कि पुरानी कहानियों के सहारे अनुमान लगाया जाता है कि उन्होंने शौडों से अपनी भाषा सीखी और उन्हीं की भाषा को पूर्ण रूप से ग्रहण भी कर लिया। यह शौड़

फिन लैंड, एस्कोनिया जोरिया और हगारी से सम्बन्धित थे। अतएव इनकी भाषा इन सभी जातियों की भाषा की एक खिचड़ी है।

लैप लोग रेंडियर भी काफी पालते हैं परन्तु उन्होंने कब से रेंडियर पालना आरम्भ किया यह कहना कठिन है। यह अनुमान किया जाता है कि पहले लैप लोग जंगली थे और जंगली जीवो के शिकार पर ही निर्भर रहा करते थे। यह लोग पहले मछली पकड़ते, शिकार करते और जंगलों में घूमकूड़ जीवन व्यातीत करते थे। परन्तु जैसे जैसे इन्होंने जानवरों को पालतू बनाना आरम्भ किया वैसे ही वैसे वे गृहस्थ होकर स्थाई जीवन व्यतीत करने लगा। इसी तरह से इन लोगों ने रेंडियर का पालना आरम्भ कर दिया।

पहले लैपों को रेंडियर पालना उतना आवश्यक नहीं था जितना आज है पहले कुछ कुटुम्ब रेंडियर बिल-कुल ही नहीं पालते थे और वे शिकार पर निर्भर रहते थे। आज कल प्रायः सभी रेंडियर पालते है। जब से ये लोग पर्वतों की ओर बढ़े तब से तो रेंडियर का पालना बहुत ही बढ़ गया परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं

कि पर्वतों पर ही रेंडियर पाले जाते है यह लोग निचले मैदान के दलदल और जंगलों में काफी पाले जाते हैं। स्थानों पर पालने वाले इतना लैपों को फोरस्ट लैप (जंगली लैप) कहते है।

आर्थिक दृष्टि से लैपों के तीन गिरोह हैं। पहला वह गिरोह जो खास चरागाह के में रहा करते हैं। दूसरे वे जो पर्वतों पर रहते हैं और सदैव घूमते रहते है और तीसरा वह गिरोह जो जंगलो मे रहता है। और जिनको जंगली लैप कहते हैं। तथा मछली पकड़ने वाले लैप जो समुद्र के तट पर रहते हैं।

आज कल समस्त लैपा ईसाई धर्म के अनुयाई हैं। पहले यह लोग ईसाई धर्म को नहीं मानते क्यो यह लोग प्राचीन विश्वासो मे ही पहले निमग्न थे। परन्तु मिशनरियों के उद्योग से १४वीं शताब्दी के अन्त में प्रायः सभी लैप ईसाई धर्म में विश्वास करने लगे। यह लोग धर्म सुधार की लहर के साथ साथ अपने धर्म को अधिक उन्नतिशील और दूर दर्शी बनाने लगे। धीरे धीरे इन लोगों ने प्रोटेस्टेन्ट धर्म को भी स्वीकार कर लिया।

जिप्सी-दर्शन

इसमे सन्देह नहीं कि प्रोटेस्टेंट की लहर ने देश की समस्त कला, ललित कला तथा साहित्य के सौन्दर्य को आघात पहुँचाया नाच, रंग, खेल, तमाशे, संगीत तथा निमन्त्रण आदि प्रथाओं और उत्सवों को भी इस नए धर्म से चोट पहुंचा और लोगों का मस्तिष्क अधिक वास्तविक का शुष्क और कल्पना शून्य तथा वह स्वतन्त्रा और प्रसन्न दीख पड़ता। यही दिन लोगों के सब से आनन्द के दिन होते हैं।

मार्च के अन्त में जाकमाक गोल जंगल को छोड़कर दूसरे स्थान को प्रस्थान कर देते हैं। इन लोगों के साथ गृहस्थी का सारा सामान रहता है उनकी स्त्री बच्चे, सम्बन्धी और उनके पालतू जानवर भी उनके साथ रहते है। इस गिरोह को सिडा कहते है। सिडा वास्तव में एक लम्बे कुटुम्ब को कहते है। परन्तु जब कोई जीप अकेले नहीं रह सकता या अकेले अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह इसमें सम्मलित हो सकता है। यह सिडा साल साल पर साथ भ्रमण करने के लिये निकलते है। वे हमेशा एक ही मार्ग अपनाते हैं। वसन्त की ऋतु में वे केवल एक चरागाह और आराम

करने की स्थान को चुनते हैं। इन लोगों के जीवन में परिवर्तन मौसम के परिवर्तन के साथ साथ होता रहता है।

इन लोगों की स्त्रियाँ अच्छी तरह से वस्त्र पहने रहती हैं यह लोग 'कोल्टे' का प्रयोग करती है। कोल्टे एक लबादे की तरह होता है यह कोल्टा मर्द और औरत दोनों प्रयोग करते हैं। यह 'कोल्ट' घुटन तक का बना रहता है। स्त्रियाँ तरह तरह के रंगों से अपने को सजाती भी हैं। यह लोग आपस में मिल कर प्रेम से रहते हैं। इनकी भाषा भी अत्यन्त मनोहर होती है। आदर्शहीन हो गया। परन्तु इन लैपों में आज भी पुरानी सभ्यता के कुछ चिन्ह वर्तमान हैं। उनके ऊपर योरूपीय सभ्यता का उतना प्रभाव नहीं पड़ा। इस प्रकार लैप लोग प्राचीनता के एक स्मरणीय चिन्ह है। जो हमें प्राचीन सभ्यता स्मरण दिलाते हैं। हम पहले जाकमाक और कोस्काणों के लैपों का वर्णन करेंगे।

(१) जाकमाक के लैपों का इतिहास

वसन्त के समय लैप लोग अपने शीत कालीन कैम्पों को उखाड़ डालते है। इसका उखाड़ कर यह

लोग अपने रेंडियर के साथ पर्वतों की ओर चल देते हैं। इस समय की यात्रा कम दुःखदाई नहीं होती। यद्यपि शीत काल की वे रातें समाप्त हो जाती हैं फिर भी जगह जगह पर बर्फ का पिघलना और उस बर्फ का अभी तक झीलों और नदियों में एकत्रित रहना कभी भयानक नहीं होता कभी कभी यह बर्फीले स्थान इतना फिसलते है कि उन पर यात्रा करना रेंडियर के लिये भी अत्यन्त असम्भव हो जाता है। परन्तु लोगों को पर्वतीय स्थान पर चरागाह की खोज में जाना ही पड़ता है। इन स्थानों पर कभी इतनी बसन्ती हवा के झोके चलते है जो मनुष्य के लिए घातक भी हो जाते है। उन्हें कभी कभी अत्यन्त शीत के कारण अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। रेंडियर केवल इस शीत में सुरक्षित रहते हैं क्योंकि उनके शरीर में बाल होते है जो उन्हें शीत से प्रभावित नहीं होने देते।

परन्तु इन कठिनाइयों से लैप लोग घबड़ाते नहीं। वास्तव में ये लोग शुरू से ही कठिनाइयों को झेलते हैं। उनका जीवन ही एक तरह की कठिनाइयों के लिये बना है। वे लोग जान बूझ कर अपने को कठिनाइयों में डालते

हैं। और जानवरों की भाँति भयानक वातावरण में अपनी रक्षा का प्रबन्ध करते हैं। उनके परिश्रम का परिणाम केवल ग्रीष्म ऋतु में मिलता है। जब सूर्य आकाश के मध्य में चमकता है और फूल खिलते हैं तब वह स्वतन्त्र और प्रसन्न दीख पड़ता। यही दिन लोपों के सब से आनन्द के दिन होते हैं।

वैस्लुवता से एक रास्ता गया है। यहाँ से लगभग नार्वे के सीमान्त तक की दूरी पर एक सीधा रास्ता जाता है। यहां से एक मील चलने के पश्चात् एक सोता मिलता है। इसके पश्चात् दक्षिण पश्चिम की ओर काटजारजौर मिलता है। यहीं पर एक लैप की झोंपड़ी मिलती है। यहां पर आप आराम भी कर सकते हैं। इन स्थानों पर जंगलों की अत्याधिक ज्यादती है। हम लोग अगर यहां की यात्रा करें तो हमें यहां बहुत सी झीलों को पार करना पड़ेगा दोनों तरफ असीम जङ्गल फैलते हुए दिखाई पड़ते हैं। इन स्थानों पर आदमियों का कहीं नाम निशान तक नहीं मिलता धीरे धीरे पर्वत अपने नजदीक आने लगते है। इस समय जब हम यात्रा से बहुत थके रहते है तब हमें यह

लौप-दर्शन

पर्वत अत्यन्त गम्भीर बड़े और ऊचे मालूम पड़ते है। इसी प्रकार हमको बाहर तेजी के साथ झरनों और झीलों को पार करते हुए आना पड़ता है। इस प्रकार हम अपनी यात्रा को दूसरी बार बदल कर तै कर सकते है। इसके पश्चात् अन्त में हम लोगतन्जोर नामक सबसे बड़ी झील के पास आते है। यह सबसे ऊँची झील है। इसमें पानी बर्फीले पर्वत की चोटियों से आया करता है।

इसके पश्चात् हम वैसलुक्ता में पहुँचते हैं। यहाँ के लौप अनजान पुरुषों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रखते। वे उनको अधिक मदद करने के लिए भी तैयार नहीं होते यहां के लोग अपने इस मिलनसार न होने के लिए प्रसिद्ध है। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे एक दम असभ्य होते है। मिलने पर और अधिक संपर्क होने पर वे बाहरी लोगों को अधिक से अधिक सुविधा पहुँचाते हैं।

हम लोग यात्रा के समय वहां के एक कुटुम्ब के साथ हो लिए थे। इस कुटुम्ब का सबसे बड़ा मुखिया हमारे कारवाँ को ले जा रहा था। हम लोग आधीरात के

समय अपनी यात्रा आरंभ किए थे। रास्ते में जमीन कुछ उपजाऊ मिलना आरम्भ हो जाती है जौ के पौदे भी निकलते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसके पश्चात् हम लोगों पर्वतीय स्थानों पर चढ़ना शुरु किया इस समय हमें लोगों के जीवन को देखकर एक ही इच्छा होती थी। हम लोगों को भी यही इच्छा होने लगती है। कि अब सारे सामान छोड़ दिए जावे जब और नामड का जीवन व्यतीत किया जाए यहां पर लोग कितनी परेशानियों के बीच भी खुशी से रहते है। वे घास के मैदान में बैठ कर बातें करते है। इन्ही स्थानों पर बैठ कर वे भोजन करते है। वे लोग कूदते और खेल खेलते है। वे एक लम्बी स्टिक रखते हैं। और उसी के सहारे वे चट्टानों से फिसलते हैं। पर रात में भी सूर्य की मन्द ज्योत्सना चमकती रहती है। यह प्रकाश यात्रा करने में बड़ी आसानी पैदा करता हैं। परन्तु सूरज की किरणें हमें किसी तरह की गर्मी नहीं पहुंचाती। इसके कारण समस्त बर्फ जमी रहती है। ग्लेसियर से होती हुई हवा भी चलती है जो शर्दी को और भी बढ़ा देती है।

काटजारजोरप का प्रातःकाल सुहावना अवश्य होता

है। ठंडी हवा बहती है जो मनुष्य को एक ताजगी पैदा कर देती है। सूरज की सुबह की किरणें चट्टानों और बर्फीले स्थानों पर चमकते हुए दिखाई पड़ते हैं। लैप लोगों की झोपड़ियों के सामने बंधे हुए बकरों और बकरियो की घंटियाँ बजती है जो उस स्थान में एक ताजगी पैदा कर देती है।

प्रातः काल लैप लोग कहवा का प्रयोग करते है। कहवे ही से यह लोग अपने अतिथियों का स्वागत भी करते है। प्रायः यह कहवा पीते हैं। सुबह के समय इन लोगों का वस्त्र ही 'कोल्ट' या लबादा होता है। इसके अतिरिक्त यह लोग रेंडियर तथा दूसरे गर्म जानवरों की खाल का भी वस्त्र पहनते हैं।

इस स्थान का प्राकृतिक दृष्य अत्यन्त मनोहर होता है। पर्वतीय श्रेणियाँ दूर तक फैली हुई दिखाई देती है। उन पर्वतों के ऊपर चमकती हुई बर्फ की चट्टानें पड़ी रहती है। सामने झील होती है। झील का पानी अत्यन्त स्वच्छ होता है। इसका किनारा शान्त और गम्भीर होता है। इसके किनारे पर इतनी शान्ति रहती है कि कोई मनुष्य यह नही पता लगा सकता कि झील

लहरे तब किनारे पर आती है और बिना किसी शब्द किए समाप्त हो जाता हैं।

यहां हमें यात्रा करने के लिए नावों का सहारा लेना पड़ता है। परन्तु हम यहां एक बोट से काम नहीं चला सकते। एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए हमें अपनी नावों को छोड़ना पड़ता है। और नावों को बदलते रहना पड़ता है। लैप लोग जब फिर वापस आते हैं तब वे इन नावों को ले जाते हैं।

रेंडियर का जमाव

शरद् और बसन्त ऋतु में प्रायः रेंडियर अपना मार्ग भूल जाते हैं। कभी कभी तो सब का सारा गिरोह ही मार्ग च्युत हो जाता हैं। कभी कभी रेंडियरिनी अपने बच्चों के साथ दूसरी जगह बहक कर चली जाती है। रेडियरिनी अच्छी माँ नहीं। यह अपने बच्चों को बहुत प्यार नहीं करती कभी कभी बच्चे के पैदा होने के थोड़ी देर के पश्चात् ही रेडियरिनी उसे छोड़ कर चल देती है। बच्चा दो सप्ताह के बाद इस योग्य हो जाता है कि वह अपने को पूर्ण रूप से परिस्थितियों के बीच सम्भाल सके। और स्वतन्त्र होकर जीवित रह सके। यह बच्चे

अवसर पाकर दूसरी रेंडियरिनियों के साथ सो लेते हैं। कुछ रेंडियरिनी इन्हें अपना दूध भी पिलाती हैं। इस प्रकार उनके बच्चे आसानी से जी जाते है।

बिछुड़े हुए जानवरों की खोज शरद् काल में नहीं हो सकती क्योंकि समस्त भूमि बर्फ से ढकी रहती है। इनकी खोज ऐसे भी अवसर पर नहीं की जा सकती जब कि बड़े बड़े तूफान चलते रहते है। उस समय के के बिछुड़े हुए जानवर जिस किसी भी झुंड को देख लेते है उसी के साथ वे हो लेते हैं उनके झुंड में मिलने को झुंड के मालिक कोई एतराज नहीं करते। परन्तु जब ग्रीष्म ऋतु आ जाती है और जब मौसम यात्रा करने योग्य हो जाता है तब खोए हुए पशुओं के मालिक अपने अपने जानवरों को खोजने के लिए निकलते है वे प्रत्येक झुंड में जाते हैं और अपने जानवरों को पहचान कर निकाल लाते है लैप लोग जानवरों के पहचानने के लिए चिन्ह भी बना लेते हैं। परन्तु अपनी सुविधा के लिए प्रति वर्ष वे एक निश्चित स्थान पर एकत्रित भी होते हैं। उस निश्चित स्थान पर सब लोग जाकर अपने अपने जानवरों को पहचान कर

निकाल लेते है। इसके पश्चात् वे लोग फिर अपनी जीविका की खोज करते हैं।

जानवरों की पहचान के लिये केवल १८ चिन्ह ही लैप लोगों में निश्चित है। यह चिन्ह या तो एक कान में या दोनों कानों में निश्चित किए जाते हैं। लोग कानों में सूराख बनाते हैं या कान को काट देते है। केवल १८ ही चिन्हों के होने से यह समझना चाहिए कि बहुतों के चिन्ह एक दूसरे से मिल जाते होंगे। ऐसा बहुत कम होता है। क्योंकि इसी चिन्ह में अनेक चिन्हों का मिश्रण हो जाता है।

प्राय: छोटे बच्चे ही खोते है जिनका आसानी से पता लगाना मुश्किल हो जाता है। परन्तु एक योग्य जानवर का मालिक अपने पशुओं को अच्छी तरह से जानता है। जब कोई दूसरा जानवर उसके झुंड में आ जाता है तब वह दूसरे कैम्पों में अनजान जानवरों के आने की खबर भेज देता है। वह यह भी खबर भेजवाता है कि जानवरों का जमाव अमुक तिथि पर होगा। ऐसे अवसर पर जिनके जो जानवर बिछुड़े होते हैं वे आकर पहचानते है और उन्हें ले जाते हैं।

परन्तु अधिकतर खोए हुए जानवरों के मालिक खबर की परवाह नहीं करते। जैसे ही उनके जानवर खो जाते है वैसे ही वे खोजने के लिए चल देते हैं। स्टेप के मैदान में जहाँ कि शरदी और प्रचंड हवा की भयानकता का अधिक डर नहीं रहता जानवरों की खोज प्रायः प्रत्येक समय हुआ करती है।

रेंडियर का जमाव हर स्थान पर नहीं किया जाता यह प्रायः उसी स्थान पर किया जाता है जहाँ पर रेंडियर के रहने और उनके चरने इत्यादि की काफी सुविधा हो। जहां पर समस्त जानवर एकत्रित हो सके और जहाँ से उनके भागने की कोई आशा न पाई जा सके। अतएव उनका जमाव प्रायः घास के मैदानों में होता है।

अक्सर जानवर को अपने गिरोह का मालिक भी बनाया जाता है। पहले जब लैपों का जमाव या सभा नहीं हुआ करती थी तब रेंडियर को उसके मालिक के पास भेजने का दूसरा ही नियम होता था। उस समय उस बहके हुए रेंडियर के ऊपर उस मालिक का चिन्ह लगा दिया जाता था जिसके पास वह बिछुड़

कर पहुँच जाता था वह मालिक उस रेंडियर को जिले के चुने हुए व्यक्ति के पास भेज देता था। यह चुना हुआ व्यक्ति प्रत्येक जिले में नियुक्त किया जाता था। वह छः महीने तक के लिए चुना जाता था। उसी के पास वह खोया हुआ रेंडियर एक निश्चित समय तक रहता था। इतने पर भी जब उसके मालिक का पता नहीं मिलता था तो उसे नीलाम कर दिया जाता था। यह प्रथा आजकल भी प्रचलित है।

कभी कभी मालिक अपने पशुओं के चिन्हो को बदलते भी है। परन्तु वे लोग अपने आप उन चिन्हों को नहीं बदल सकते उन्हें चिन्ह के बदलने के लिए दो ऐसे जिम्मेदार व्यक्तियों को गवाह बनाना पड़ेगा जो लोगों आसानो से लोगों की पहुँच के बाहर हैं। यह नियम बड़ी सतर्कता पूर्वक प्रयोग में लाया जाता है क्यों कि जो थोड़ा भी सफेद होता है कि कोई व्यक्ति दूसरे के रेंडियर पर अपना अधिकार स्थापित किए हुए है, वहां तुरन्त वह जानवर नीलाम कर दिया जाता है।

कभी कभी झुंड के मालिकों में आपस में वादा

विवाद भी हो जाता है। उनमें आपस में लड़ाई भी होती है। परन्तु यह झगड़ा तभी शान्त किया जाता है जब कि सभी लैपों की एक सभा होती है। सभा में सारे आपसी झगड़े और पशुओं के विषय में भिन्न भिन्न रायों को सुझाने का प्रयत्न किया जाता है।

स्वीडन के लैप विदेशियों के साथ अधिक सन्तोष प्रद व्यवहार नहीं करते। अपनी जायदाद पर पूर्ण स्वामित्व का भाव रखते हैं। उनके कैम्प और उनकी भूमि पर कोई व्यक्ति जाकर निश्चिन्त होकर नहीं रह सकता वे लोग वहाँ की सारी सम्पत्ति पर लैपो का आधिपत्य मानते है। यदि आप स्वीडन की सरकार से आज्ञा लेकर भी वहाँ जाय तोभी वे लोग विना विरोध किए नहीं रहेंगे।

लैप लोग यूरोप की नागरिक सभ्यता और वहाँ के रीतिरिवाजो से प्रायः अनभिज्ञ है। एक बार एक लैप शहर गया उसने वहाँ एक सिनेमे की फिल्म देखो। उस फिल्म ने उसके हृदय में कुतूहल पैदा कर दिया वह व्यक्ति बदली हुई आवाज़ से बाते करने लगा। यह घटना जब दूसरे सम्बन्धियों को मालूम हुई तो उन्होने

उसे भूत प्रेतों की छाया से आवृत्त हुआ समझा और उसकी झार फूक करने लगे।

लैपों का भोजन मांश ही से होता है। रेंडियर इन लोगों का सारा काम पूरा करता है। नर रेडियर लादने के काम में आता है। परन्तु उसे वे लोग काट भी डालते है और उसके मांस से अपनी जीविका चलाते है। अधिकतर नर रेंडियर या तो काटे जाते हैं या उन्हें बाज़ार में बेच दिया जाता है। इनको केवल शरत् काल में बेचा जाता है। नर रेंडियर बहुत थोड़े पाले जाते है। जो पाले जाते हैं वे केवल गोस्त के लिए ही नियुक्त रहते हैं। उनके खून को भी यह लोग बड़े चाव से पाते है। इनको पालना पहले बड़ा कठिन होता है। अतएव उन्हें कुछ दिन तक यह लोग पेड़ में बाँध देते है। जब उनका जंगली पन निकल जाता है तब उन्हें छोड़ देते है और वे दूसरे पशुओं के झुंड में सम्मलित हो जाते हैं। कुछ ऐसे होते जो आसानी से पालतू हो जाते है परन्तु कुछ रेंडियरों को पालतू होने में देर लगती है। प्रायः देखा जाता है कि उनका जंगली पन बसन्त की ऋतु में दूर हो जाता है। अतएव बसंत के वाद वे

आसानी से पालतू जानवर बनाए जा सकते है।

लैप लोग प्रति वर्ष रेंडियर का अलग अलग नाम रखते हैं। हर एक वर्ष में उनके भिन्न भिन्न नाम होते है। यह भिन्न भिन्न नाम ७ वर्ष तक के रेंडियर के लिये प्रयुक्त किये जाते है। सात वर्ष के पश्चात् जब वे पूर्ण रूप से बढ़ जाते है तब वे नम्मा लप्पा के नाम से पुकारे जाते हैं। यद्यपि यहां के सारे लैप ईसाई धर्म के अनुयायी है परन्तु वे बड़े ही अन्ध विश्वासी है यह सत्य है कि वे लोग व्यर्थ की बातों में विश्वास न करने की पूरी साक्षी देते हैं। परन्तु वे उन चीज़ों को करने से डरते अवश्य है। वे लोग उस काम को कभी न करेंगे जिसको पुराने लोगो ने कहा है कि यह कार्य उनको अभाग्य और दुःख की ओर ले जायगा। कोई भी लैप रेंडियर के बाल या खाल को आग में नहीं छोड़ेगा क्योंकि उन लैपों का विश्वास है कि ऐसा करने से उनके पशुओं के झुंड को आघात पहुँचेगा। कोई भी लैप एक पाव में जूता पहन कर कहवा नहीं पियेगा क्योंकि यह काम उनकी स्त्री को विधवा कर देगा अर्थात् उसकी मृत्यु हो जायगी। इसी प्रकार उनका

यह भी विश्वास है कि अगर खाली पेट कोयल की आवाज़ कान में पड़ जाय तो अवश्य ही कोई न कोई आपत्ति उनके ऊपर आने वाली है। परन्तु यदि आप उस पेड़ के पास तीन बार जायँ जहाँ वह कोयल बैठी है और उस पेड़ की तीन बार परिक्रमा करें तो आप की सारी मनोकामनाएं पूरी हो जायगी। इसी प्रकार के अगणित अन्य विश्वास हैं जिनको यहाँ के लोग मानते हैं और उनके अनुकूल चलते है।

लैप लोगों के साथ की यात्रा कम आनन्द दायक नहीं होती। वे लोग प्रायः पर्वतीय स्थानों के प्रत्येक मार्ग से परिचित रहते हैं। आप उन पर्वतीय स्थानों पर जायं तो आपको मार्ग ढूँढ़ना असम्भव हो जायगा। आपको वहाँ की समस्त पर्वत श्रेणियाँ एक सी नजर आवेगी। उन स्थानों की धारा में छिपे हुये मार्ग आप का मार्ग विचलित कर देंगे परन्तु वहां एक लैप ऐसा न होगा जो वहाँ के मार्गों से अच्छी तरह परिचित न हो। वह घासों के प्रत्येक मार्ग से अपना रास्ता ढूढ़ निकालता है। वहाँ पर कोई भी ऐसी जगह भी न होगी जहाँ पर कभी न कभी उनका पड़ाव न पड़ा हो।

लैप-दर्शन

लैप लोग कम बहादुर नहीं होते। कभी कभी यह लोग जंगली जानवरों तथा रीछों से बड़ी वीरता से लड़ते हैं, और उसे मार डालते है।

यहाँ का समस्त देश जैसा कि लैप विश्वास करते हैं, उल्दास' से हुआ है। यह 'उल्दास' जमीन के अनन्दर कुछ पर्वतों और कुछ झीलों मे रहते हैं। उनकी शक्ल मनुष्य की सी होती है और उनका अधिकार कुत्तों और रेंडियर के ऊपर होता है। कभी कभी, ऐसा भी सुना जाता हैं कि उनके गिरोह का घन्टा बज रहा हैं। वे लोग आपस में बात चीत कर रहे है। कभी कभी उनके कुत्ते भी भूँकते हुए सुनाई पड़ते हैं। ऐसे लोगो को बहुत थोड़े लैपों ने देखा है। यह लोग केवल इन्हीं को दिखाई पड़ते है जो ईमानदार, और भक्त और सज्जन होते हैं। यह केवल उन लोगो को स्वप्न में मिलते है और उन्हें आशीर्वाद देकर चले जाते है। यह प्रथा हमारे यहाँ भी प्रचलित है। इन का स्थान हमारे यहाँ के देवी देवताओं के स्थान के बराबर हैं।

बड़ी बड़ी चट्टानो के बीच राक्षस भी होते है। स्टैली यहाँ का मुख्य देव है। यह सभी मनुष्यों की जान

का प्यासा होता है। अर्थात् इसका कर्त्तव्य मनुष्यों का मारना है। कहीं कहीं पर कुछ प्रेतात्माएं होती है जो गड़े हुए धन की रक्षा करती हैं। इन प्रेतात्माओं की पहचान जंगल में अचानक आग जलने और बुझने से लगाई जाती है। इस धन को केवल वही मनुष्य प्राप्त कर सकता है जो प्रेतों से बिल्कुल न डरता हो। राक्षसों से भी निडर हो वही व्यक्ति वास्तव में गड़े धन को उठा सकता है। कोई कोई और भी प्रेतों की छाया होती है जो लैपों को एकान्त में मिला करती है।

इस देश के त्येक स्थान में चाहे वह जंगल हो या पहाड़, या मैदान या एकान्त चट्टान, इन प्रेतों और देवताओं के चित्र बने हुये है। लोग उन्हीं लोगों की अधिक पूजा करते थे जिनसे उन्हें अधिक भय रहा करता था। इन देवी देवताओं के मंदिर भी बने होते है। लोगों का विश्वास है कि उन लोगों ने प्रकृति के ऊपर अधिकार स्थापित कर लिया था। उनका हवा और मौसम पर पूर्ण साम्राज्य था। यह विश्वास पहले बहुत प्रचलित था। लोग इनको बड़ी श्रद्धा से पूजा करते थे परन्तु जब से ईसाई धर्म का प्रचार हुआ तब से यह

अन्ध विश्वास मिट गये हैं। हाँ उनकी प्राचीन स्मृति आज भी लोगों के हृदय में भय और भावी डर की चिन्ता उत्पन्न कर देती है।

रेंडियर का पालना

सम्भवतः यह कभी भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता कि रेंडियर क्यों इधर उधर घूमा करते हैं। अनुमान लगाया जाता है कि वे एक स्थान पर रह कर वहाँ की गर्मी को पूर्ण रूप से सहन नहीं कर सकते अतएव गर्मी की ऋतु में वे पर्वतीय स्थानो में चले जाते है यद्यपि उनको वहाँ पर घास चरने की अधिक सुगमता नहीं होता।

रेनडियर प्रायः मनुष्य के पड़ाव से या मनुष्यों के समुदाय से दूर ही रहता है। परन्तु उसकी निगरानी के कई साधन है। कभी कभी झुंड का जो नायक होता है, उसकी गर्दन में एक घन्टी बाँध दी जाती है। इसी घन्टी की आवाज़ सुनते हुए सभी पशु उसका पीछा करते हुए चले जाते है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी रेन डियर होते है जो केवल मनुष्यों का पीछा करते है। ऐसी हालत में मनुष्य ही उनके आगे आगे चलता है और उनके मार्ग में चलने का नेतृत्व करता है।

मनुष्य के समुदाय के साथ कुत्ते भी रहा करते हैं। इन कुत्तों को अच्छी तरह से सिखाया हुआ होना अत्यन्त आवश्यक है। यही कुत्ता अवसर पड़ने पर रेंडियरों को भागने से बचाते हैं और वे उन्हें मालिक के इशारे पर फिर झुंड में ला खड़ा करते हैं। यह कुत्ते भूले हुए रेनडियर को फिर से उचित मार्ग पर लाने का काम करते हैं।

बसंत ऋतु में जब मादा रेनडियरनी बच्चा देने के करीब होती है तब उसे झुंड से अलग कर दिया जाता है जैसा जवान और छोटे बच्चों के साथ किया जाता है। जब इस प्रकार गर्भवती मादा रेंडियर झुंड से अलग कर दी जाती है तब दो झुंड बन जाते हैं। ये दोनों झुंड अपनी अपनी गति से चलते हैं।

मादा रेंडियर जब गर्भवती रहती है तब विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह अवसर पाकर पर्वतों की ओर भाग जाती है। वहीं बच्चा देती है। बच्चा वहाँ पर अच्छी जलवायु न पाकर मौत का शिकार हो जाता है। बच्चों की मौत बर्फीले स्थानों गड्ढों या नदियों में पड़कर भी हो जाती है। इसलिए लैप

लोग उनके जन्म के समय अपनी यात्रा स्थगित कर देते हैं और उन्हें बच्चा पैदा करने के लिए एक बहुत उपयुक्त स्थान निश्चित करते हैं जहाँ बच्चे को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

जब मादा नर बच्चे दे देती है तब उनके मालिकों की कठिनाई बहुत कुछ दूर हो जाती है परन्तु इसमें शक नहीं कि बच्चों के मरने की संख्या अत्यधिक होती है। इनकी मृत्यु शरत काल की कठोरता से होती है। पानी, नदी, झरना में गिरने से होती है। इनको रेनडियर कुत्ते और जंगली जानवर भी खा डालते हैं। इस प्रकार बहुत मुश्किल से थोड़े से बच्चे सुरक्षित रह पाते हैं।

जब रेनडियर बढ़कर जवान हो जाता है तब वह अपना भोजन बड़ी आसानी से खोज लेता है। वह बर्फीले मैदानों को छोड़कर भी अपना भोजन प्राप्त कर लेता है। परन्तु जब बर्फ अत्यधिक कड़ी हो जाती है। और वह उसे किसी प्रकार भी तोड़ने के योग्य नहीं रहता तब वह ऊपर की काई या झाड़ियों के पत्ते इत्यादि

खाकर जीवित रहता है परन्तु इससे इनका भोजन पूरा नहीं होता।

झुंड का रक्षक

रेनडियर के झुंड पर आक्रमण करने वाले बहुत से शत्रु होते हैं ऐसी स्थिति में झुंड के रक्षक को कभी कभी अपने जीवन को खतरे में डालकर उनकी रक्षा करनी पड़ती है। इन रक्षकों को नौकरी लैप लोगों की में सबसे प्रमुख समझी जाती है।

जानवर के झुंड की रखवाली करने के बहुत से ढंग है। सबसे आसान ढंग उनके छोड़ देने का है। यह झुंड उसी समय स्वतन्त्रता पूर्वक छोड़े जाते हैं जब कि वहां चरागाह काफी हो और कोई प्राकृतिक बाधा उनके जीवन में न पड़े। यह जानवर केवल रात में ही स्वतन्त्रता पूर्वक छोड़े जाते है रात में लोग अपनी अंगीठी के सामने बैठे रहते हैं और उन्हें चरने के लिए छोड़ देते हैं क्योंकि रात में इतना अन्धकार हो जाता है कि उस अंधेरे में उनका बाहर जाना असम्भव हो जाता है। केवल दिन में उनको अच्छी चौकसी करनी पड़ती है। दिन में रेनडियर के बहक जाने का डर रहता है।

लैप-दर्शन

सब से दुःखदाई समय रेनडियर की रक्षा करने और इनके सम्भालने का उस समय होता है जब उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना होता है। ऐसे समय में इनकी रखवाली दिन रात करनी पड़ती है। कभी कभी जब भेड़ियों के आक्रमण का भय होता है तब भी इनकी रखवाली अत्यन्त सतर्कता से करनी पड़ती है।

झुंड के रक्षक का सबसे बड़ा शत्रु बरसात है। पानी के अन्दर चलना, पिघलती हुई बर्फ के बीच रहना वास्तव में उनके जीवन को दुःख की पराकाष्ठा तक पहुंचा देता है। कभी कभी ऐसा भी समय आता है कि वे लोग अग्नि भी नहीं जला सकते। अग्नि न जलने के कारण न वे अपने को सर्दी से बचा पाते हैं और न वे कहवा ही बना कर पी सकते हैं। यह लैप लोगों के जीवन की ऐसी आवश्यक वस्तुएँ हैं जिनके बिना उनका जीवन एक दम भार तुल्य हो जाता है। ऐसी स्थिति में जब तेजी से बर्फ गिरती है और प्रचंड हवा चलती है तब उनके सामने केवल एक ही मार्ग रह जाता है, वह यह कि वे किसी जंगल में जाकर शरण लें या

अपने कुत्ते के सहारे बर्फ के टुकड़ों के अन्दर सूराख बना कर भीषण प्रचंड हवा से अपने को सुरक्षित करें। बहुत से रेनडियर के रक्षकों को इसी प्रकार जीवन के युद्ध में लड़ना पड़ता है और उन्हें कभी कभी अपने जीवन का भी समर्पण करना पड़ता है।

परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि इन रक्षकों का जीवन सदैव दुःख और खतरे का है। जीवन होता है। गर्म की ऋतु में इनका जीवन इतना सुन्दर होता है कि हमें उस जीवन के लिए लालच लगने लगता है। गर्मी में जब सूर्य की मन्द धूप समस्त प्रदेशों पर चमकती है; जब चिड़ियाँ प्रातःकाल अपने मनोहर गान से वातावरण को मुखरित कर देती हैं; जब वहाँ की मुर्गियाँ प्रातः काल बोलती और पर फटफटा कर उड़ती हैं, उस समय वहाँ का चरवाहा होना कम आनन्द दायक और ईर्षालु नहीं होता।

कम सर्दी का ऋतु भी चरवाहों का सतोष-प्रद समय होता है। इस समय जब चन्द्रमा अपनी शीतल ज्योत्स्ना पृथ्वी पर फैलाता है और जब उसकी किरणे बर्फ की चट्टानों पर चमक कर समस्त वातावरण को

रजतमय बना देती है तब रखवाले का जीवन प्रसन्नता से खिल उठता है जब इस वातावरण में वह अपने रेनडियर को चरते हुए, उनके बच्चों को खेलते हुए देखता है तब उसका मन मोर की तरह खुशी से भर जाता है। उसके सन्तोष की उस समय और भी सीमा नहीं रहती जब वह अपने जानवरों को पूर्ण रूप से सुरक्षित देखता है।

रात्रि के समय आसमान में तारे चमकते हैं। जब चन्द्रमा नहीं रहता तो यही तारे जमीन को रोशन पहुँचाते हैं। यह तारे टूटते भी हैं। यह टूटे हुए तारे पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। यहाँ के लैप आसमान के चिन्ह को जानते हैं। वे यह भी अनुभव से पता लगा लेते हैं कि आसमान का किस प्रकार का रंग दुःख लावेगा और किस प्रकार की स्थिति सुख। जब उत्तरी प्रकाश तेज रहता है तब यह आशा की जाती है कि बर्फ और भीषण हवा आवेगी जब दक्षिण पश्चिम से अधिक प्रकाश दिखाई पड़ता है तब वे लोग दक्षिणी-पश्चिमी हवा के प्रवाहित होने की आशा करते हैं। और जब वह उत्तरी क्षितिज पर चमकता है तब उन्हें विश्वास हो जाता है कि कोई अनिष्टकारी घटना होगी।

देश दर्शन

शरत काल में जब प्रातःकाल क्षितिज में चमकते हुए लाल बादल दिखाई पड़ते हैं तब लैप लोग उनको देखते हैं कि वे किस ओर घूम रहे है। यदि वे सूर्य की तरह से नीचे की ओर जाते हैं तब ओले पड़ने की आशंका की जाती है। यदि बादल की ओर जाते हैं। और ऊपर जाकर वे तितर बितर हो जाते हैं तब शान्त और सुखप्रद वातावरण की आशा जाती है। उसमें जब बिजली चमकती है तब उसका अभिप्राय यह होता है कि बर्फ गिरेगी और सर्दी काफी पड़ेगी। यदि बिजली उत्तर-पश्चिम की ओर चमकती है और क्षितिज में शान्ति हो जाती है तब उत्तरी-पश्चिमी हवा की आशा की जाती है।

यहां कुहरे का भी एक विशेष मन्तव्य होता है। जब नदियों और झीलों के तट पर प्रातः काल कड़ा कुहरा दिखाई पड़ता है तब लोग समझ जाते हैं कि यह कुहरे बादल के रूप में परिणत हो जायंगे और वे वर्षा लाएगें। अगर यह कुहरा घाटियों में समाप्त हो जाता तब अच्छे मौसम की आशा की जाती है। जब खराब मौसम के पश्चात् चमकीला और स्वच्छ प्रातः काल होता है तब खराब मौसम के सुधार होने के चिन्ह प्रतीत होने

लगते है। परन्तु जब मौसम एकाएक सायंकाल में साफ हो जाता है तब धोका देने वाले समय की सम्भावना की जाती है। लोग समझ लेते हैं कि मौसम अच्छा नहीं होगा।

एक अच्छा अनुभवी और योग्य रक्षक इन सभी चिट्ठी को अच्छा तरह से जानता है। कुछ रक्षक भूख लगने पर अपने कर्तव्य से नहीं हटते जब तक कि कोई उन्हें आकर छुड़ा नहीं देता जब वे लोग चकित हो जाते हैं तब वे वहीं पर सो भी जाते हैं। परन्तु कुछ खराब और अकर्तव्य रक्षक भी होते हैं परन्तु वे भी अपनी लापरवाही के फल को अच्छी तरह जानते हैं। वे समझते हैं कि अगर वे अपने झुंड की रक्षा करने में सुस्ती करेंगे तो उनके रेनडियर तितर बितर हो जायंगे। उसे उन्हें ढूँढ़ने के लिए परेशान होना पड़ेगा, और यदि वे उसे नहीं पावेंगे तो उसका प्रभाव उसके कुटुम्ब पर बुरा पड़ेगा तथा कुटुम्ब के लोगों के सुख और शान्ति में बाधा पड़ेगी।

लैप लोग अपने डेरे को विचित्र ढंग से बनाते हैं। पहले वे चार पोल गाड़ देते है। इसके पश्चात् वे उनको

चारों सिरों को घुमाकर मिला देते हैं और उसे मजबूती से बाँध देते हैं तत्पश्चात् वे किनारे के पोल गाड़ते हैं। फिर दो दरवाजे के खम्भे बनाते हैं। कुछ खम्भे वे इस मन्तव्य से गाड़ते है जो खेमें के भार को सम्भाले रहे और उसे गिरने से बचाए। इन्हीं खम्भों पर दो त्रिभुजाकार कपड़े वे चारों ओर लगा देते हैं और उसे मजबूती से बांध देते हैं। डेरे में वे धुवे निकलने का भी स्थान बनाते हैं। परन्तु वह स्थान जहाँ से धुवाँ निकलता है खुरदरे मोटे कपड़े का बना होता है। प्रवेश द्वार को एक लटकते हुए दरवाजे से बन्द कर देते हैं।

बहुत सी लड़कियाँ घास और खर लाने के लिए बाहर जाती है। इन्हीं से वे अपनी छत को मजबूत बनाती हैं। परन्तु यहाँ पर लड़की का प्रायः अभाव सा रहता है। बहुत थोड़े से वृक्ष यहाँ पर उगे हुए दिखाई पड़ते है। जूनिपर की एक लकड़ी अवश्य होती है। यह लकड़ी यहां पर और लकड़ियों की अपेक्षा अधिकता से मिलती है और वह वर्ष के दिनों काफी अच्छी तरह से जलती है।

समस्त योरूप में जिस प्रकार इतवार का दिन

लौप-दर्शन

आराम करने और कार्य से निवृत्त होकर खेल कूद तथा आनन्द मनाने में बिताया जाता है उसी प्रकार यह लैप भी इतवार का दिन एक महत्व का दिन समझते हैं। इतवार को यह लोग कुछ सुस्त रहते हैं। अधिक देर तक सोते हैं। अपने सारे दैनिक कार्य को उस दिन आराम के साथ करते हैं। इतवार के दिन उनके कैम्पों में जो प्रायः धुआँ उड़ता हुआ दिखाई पड़ता है वह उस समय नहीं दिखाई पड़ता जिसका मुख्य कारण यह है कि वे देर तक निद्रा देवी की गोद में शयन करते रहते हैं कहीं कहीं पर लोग आराम से टहलते हुए दिखाई पड़ते हैं। कुछ जवान पुरुष भी आपस में बातें करते हुए दिखाई पड़ते हैं वे कूदने की आदत डालते हैं और कभी कभी दौड़ की होड़ लगाते हैं। बीस साल और तीस साल के बीच के लोग इस प्रकार खेल में मस्त दिखाई पड़ते हैं जैसे लड़के।

यहाँ पर लड़के और लड़कियाँ फुटबाल भी खेलती हुई दिखाई पड़ती हैं। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनमें फुटबाल खेलने का कम शौक होता है। युवा पुरुष भी फुटबाल बड़े शौक से खेलते हैं। इसके

अतिरिक्त यहाँ पर एक एक 'तबलो' खेल खेला जाता है। यह खेल जमीन पर खेला जाता है। एक चौकोर बोर्ड होता है इसमें लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े काट कर रख दिये जाते हैं। इसको दो आदमी खेलते है। यह खेल प्रायः उसी ढंग का है जैसे हमारे यहाँ कस्तूरा खेला जाता है।

यह खेल प्रायः इतवार के दिन बहुत आनन्द और स्वतन्त्रता के साथ खेले जाते हैं क्योंकि इस दिन सभी लोग अपने दैनिक कर्तव्यों से फुर्सत पाते हैं। इधर जब मनुष्य खेल कूद में लगे रहते हैं तब उधर घरों के स्त्रियाँ और लड़कियां खाना बनाने में लगी रहती है। वे घर की सफाई करती हैं और वे प्रायः विशेष प्रकार का भोजन तैयार करती हैं। क्योंकि प्रति दिन के भोजन से लोग ऊब जाते हैं। आज के दिन लोग पूरी तरकारियाँ दूसरे दिनों की अपेक्षा अधिक खाते हैं। रेनडियर और बकरी के दूध से यह लोग तरह तरह के पकवान भी बना लेते हैं। परन्तु इनके दूध एकत्रित करने में कभी कभी परेशानियाँ भी होती है। अतएव लोग मक्खन इत्यादि खरीद कर निकाल लिया करते हैं।

लैप-दर्शन

लैप लोगों की लड़कियाँ भी कम साहसी नहीं होती। वे बाहर जाती है और वहाँ के प्रायः प्रत्येक मार्ग से परिचित रहती हैं। वे पहाड़ियों और दलदलों में भी रास्ता ढूँढ़ लेती हैं। ये लड़कियां किसी भी वैदेशिक व्यक्ति को आसानी से मार्ग दिखा सकती हैं। इस प्रकार कभी कभी भूले भटके यात्रियों के मार्ग प्रदर्शन का कार्य किया करती हैं। उन्हें ये उचित मार्ग दिखाती हैं और यात्रा के इच्छुक व्यक्तियों को यह घुमाती भी हैं।

करेस्वेन्डो के लैप पर एक दृष्टि

जाकमाक की यात्रा के पश्चात् हम करेस्बेन्डों के लैपों की जीवन चर्या जानने के लिए उत्सुक हो जाते है। जाकमाक के लोगों का जीवन पर्वतीय है। जैसा हमने देखा है कि यह स्थान पूर्ण रूप से पर्वत, झील, घाटियों और बर्फीली चट्टानों से घिरा हुआ है। अतएव वहाँ पर आबादी भी केवल नाम मात्र के लिए है। समस्त देश उजाड़ और निर्जन हैं। इसी निर्जन बन में वे लोग रेनडियर और कुत्ते के ऊपर अपना जीवन बिताते हैं। रेनडियर ही वास्तव में उनका धन है। परन्तु करेस्वान्डो के लैपों का जीवन जाकमाक के लोगों से

भिन्न है। जाकमाक से जाने के पश्चात् करेस्वान्डो एक शहर की भाँति प्रतीत होता। करेस्वान्डो कोई शहर नहीं है। परन्तु वहां के उन स्थानों की अपेक्षा अधिक झोपड़ों को देखकर शहरों की याद आ ही जाती है।

करेस्वान्डों लैप पूर्ण रूप से जाकमाक लैप की जाति से भिन्न है। यह लोग लूल नदी के घाटी में रहते हैं परन्तु यह देखकर आश्चर्य होता है कि जिस घाटी में हजारों वर्ष से जाकमाक गिरोह के लोग रह रहे थे उसमें यह लोग कैसे आकर बस गए।

६६ और ६८ अक्षांस उत्तर को ओर स्वीडन प्रांत के टार्नलैप भार्क नामक एक स्थान है। यह स्थान फिनलैंड की अन्तिम सीमा पर स्थित है। यह स्थान निचला है और टुन्ड्रा के मैदान से मिला हुआ है। यहाँ पर रेनडियर अधिक संख्या में पाए जाते हैं। वास्तव में यही स्थान करेस्वान्डों के लैपों का मुख्य निवास-स्थान है।

कुछ वर्ष पूर्व नार्वे के लैप ने कोरोकियनों नदी पार करके इस स्थान में अपने रेनडियर को चराने के लिए आ पहुंचे। इसके पश्चात् इन लोगों की संख्या

दिन प्रति दिन बढ़ने लगी। इन लोगों की संख्या का बढ़ना तब तक नहीं स्थगित हुआ जब कि सन् १८५२ ईस्वी में फिनलैंड का सीमान्त द्वार इनके प्रवेश करने के लिए बन्द नहीं कर दिया गया अब वे लोग स्वीडन के प्रांत में फिनलैंड से होकर आने में असमर्थ है। बहुत से कारटोकियनों के लैपों ने कानून के भी प्रतिबन्ध को अपने मार्ग से हटाने के लिए स्वीडन राज्य के निवासी बन गए। उन्होंने स्वीडन की राष्ट्रीयता को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया। अब वे स्वीडन के निवासी होने के कारण फिनलैंड के राज्य को पार कर सकते थे। अतएव वे अब निश्चिन्त होकर करेस्वान्डो के लैपों से मिल सकते थे और उनके बीच रह सकते थे।

परन्तु इतने से ही उनकी आपत्ति समाप्त न हो सकी। उनकी बाधाएं बढ़ती ही गई। जब फिनलैंड के अधिकारियों ने इन लैपों की ऐसी व्यवस्था देखी तब वे स्वीडन निवासियों को भी फिनलैंड की सीमा में आने से रोकने लगे। अब इन लैपों के चरागाह का दूसरा कोई उपाय न था। अतएव उन्हें विवश होकर

दक्षिण और पश्चिम की ओर जाना पड़ा। और उन्होंने ग्रीष्म ऋतु में अपने पशुओं को नार्वे के मैदानों में चराना आरम्भ कर दिया इस स्थान पर अधिकतर जूसी नामक घास पाई जाती है।

यहाँ पर भी इन बेचारे लैपों को ठोकरें खानी पड़ी। जब सन् १९०५ ईस्वी में नार्वे और स्वीडन की सन्धि का अन्त हो गया और दोनों देशों में विद्रोह की भावना जाग्रत हो गई तब इन लैपों को देश की सीमा को पार करने का अधिकार जाता रहा। सन् १९१९ ईस्वी में इस आपसी असहयोग का अंत हो गया। दोनों देशों ने फिर से सन्धि कर ली। इन लोगों ने कानून भी बनाए। परन्तु उन्होंने कानून बनाते समय लैपों के उन प्राचीन अधिकारों और आवश्यकताओं पर अधिक जोर नहीं दिया। लैपों का नार्वे आना एक प्रकार से बन्द ही कर दिया गया। परन्तु उनके आगमन को बन्द करने का कूटनीतिक मार्ग अपनाया गया था। राज्य के अधिकारियों ने चरागाह के लिए इतना कम स्थान छोड़ा कि उस पर केवल वहीं के रहने वाले पूर्ण रूप से अपना काम मुश्किल से चला पाते थे। ऐसी

दशा में लैपों का वहाँ आना पूर्ण रूप से बन्द ही हो गया उनके रेनडियरों को भी खाने का प्रबन्ध न रहा और उनकी जड़ पूर्ण रूप से उखाड़ दी गई। ऐसी स्थिति मे वहाँ के लैपों को भी अपनी जीविका ढूढ़ने के लिए दूसरे स्थानों को प्रस्थान करना आवश्यक हो गया।

इन करेस्वान्डों लैपोंमें बहुत से लैप फिटलैंड मार्क में और बहुत से लूल लैप मार्ग में आकर बस गए। यह स्थान अभी तक पूर्ण रूप से जाकमाक लैगों के आधीन था। यहाँ पर करेस्वान्डों लैप एक प्रकार से वैदेशिक की भाँति रहते हैं। इन लोगों के लिए बड़े बड़े पर्वत आश्चर्य जनक प्रतीत होते हैं। इन लोगों के रेनडियर चराने का ढङ्ग भी जाकमाक के ढङ्ग के विरुद्ध है। इस विरुद्धका विशेष कारण दोनों देशों के भूगोल और जलवायु का अन्तर है। इसके अतिरिक्त इन दोनो लैपों के बीच में रहन, सहन, रीति रिवाज बोल चाल में भी अन्तर है करेस्वान्डों लैपों ने बहुत कुछ अपनी पुरानी आदतों को छोड़ दिया है। परन्तु उन्होंने अपनी बात चीत और भाषा को अभी ज्यों का त्यों रक्खा है। इन लोगों की

पोशाक भी अपने निरालेपन के लिए प्रसिद्ध है। इनका लम्बा नीला पैन्ट, और लम्बी सी टोपी इन्हें दूसरे लैपों से अलग ही रखती है। निसन्देह इस पोशाक को नार्वे के लोगों ने कारेस्वान्डो लैपों से बनी थी। क्योंकि यह करेस्वान्डो लैप इन लोगों की बनी भूमि में अपने खेमे डालते थे।

दूसरे पुराने लैपों की भाँति यह लोग दूसरे गिरोह के लोगों के साथ ब्याह करना उचित नहीं समझते। दूसरे दूसरे जाति के लोगों में शायद ही कभी देखा गया हो कि यह लोग ब्याह करते है। एक जाकमाक लैप न तो कभी करेस्वान्डो के यहाँ शादी कर सकता है और न करेस्वान्डो जाकमाक लैप के यहाँ।

जाकमाक लैप करेस्वान्डों के लैपों से घृणा करते है। इन दोनों जातियों में अधिक तर खिन्नता ही रहती है। दोनों एक दूसरे के मित्र शायद ही कभी हुए हो। जाकमाक लोग करेस्वाँडों के लैपों के ऊपर यह अभियोग लगाते हैं कि वे लोग अत्यन्त सुस्त और काहिल हैं। वास्तव में करेस्वाँडो लैप शरद् ऋतु में मछली का शिकार नहीं कर सकता। उसके शिकार न करने का

मुख्य कारण यह है कि वह बर्फ की कठोर चट्टानों के ओर सुराख नहीं बना सकता। वह अपने पशुओं के झुंड पर भी निर्दयता का व्यवहार करता है। वह उसकी उतनी रक्षा नहीं करता और इतना वह उनके लिए परिश्रम ही करता है जितना कि जाकमाक लैप करते हैं पहले जाकमाक लोग अधिक आराम के इच्छुक भी नहीं होते थे रेनडियर के गिरोह बनाने की प्रथा इन लोगों ने करेस्वाँडों के लैपों से ही सीखी पहले वे लोग अपने पशुओं को एकत्रित नहीं करते थे। वे प्रायः अपने जानवरों को पर्वतीय स्थानों पर छोड़ दिया करते थे। और वे इनको दिन के समाप्त होते होते एकत्रित कर लिया करते थे। परन्तु पूर्ण रूप से जाकमाक को सुस्त बनाने का अभियोग केवल करेस्वाँडों के लैपों पर ही छोड़ देना ठीक नहीं। वास्तव में करेस्वाँडों का ढङ्ग ही कुछ ऐसा सरल था जिसको जाकमाक लोगों ने आसानी से ग्रहण कर लिया। जब इन लोगों ने देखा कि करेस्वाँडो में लैप अपने रेनडियर को बड़ी आसानी से बिना किसी विशेष परिश्रम के पालते हैं तब स्वभावतः उन लोगों ने उन्हीं का ढङ्ग ग्रहण कर लिया।

देश दर्शन

करेम्ब्रान्डो के लोगों का कौटुम्बिक जीवन बहुत कुछ जाकमाक लोगों के जीवन से मिलता जुलता है। इन लोगों के कुटुम्ब में सबसे बड़ा बूढ़ा की घर का मालिक होता है। स्त्रियाँ घर का कार्य करती है यदि कोई घर में बडी लड़की होती है तब घर में भोजन इत्यादि बनाने का प्रबन्ध वही करती है।

कुटुम्ब में अभिभावुकों का व्यवहार लड़को के प्रति बड़ा उदार रहता है। वे लोग लड़को को खेलने, कूदने की पूरी स्वतन्त्रता देते हैं।

इन लोगों में विवाह का ढङ्ग भी लड़कों और लड़कियों की ही इच्छा पर अधिकतर निर्भर रहता है। जब लड़का, लडकी से वैवाहिक सम्बन्ध के लिए राजी हो जाता है तब वह अपने किसी मित्र के साथ लड़की के पिता के घर जाता है। बिना कुछ अधिक बातचीत किए हुए लड़की अभिभावकों के सामने कहवा बनाकर लाती है और उसी से उन लोगों का स्वागत करती हैं। अगर लड़की के पिता या अभिभावक उस लड़के से विवाह करने के लिए सहमत नहीं होते तो वे कहवे के प्याले को गिरा देते है और उसे धोने

से इनकार कर देते है। और यदि वे ब्याह के लिए सहमत होते है तब वे अपना चाँदी का चम्मच निकालते हैं और असीम प्रसन्नता के साथ कहवा पीते हैं। कहवा पीने के पश्चात् लड़का बुलाई जाती है। उसी समय ब्याह करने की तिथि भी निश्चित की जाती है। इन लोगों का ब्याह गाँव के चर्च में होता है। लड़कियों के अभिभावक जब ब्याह करने के लिए सहमत नहीं होते तब उनके सामने कुछ विशेष बाधाएं होती है। उनके कुछ विशेष कारण होते हैं जब वे लड़की का ब्याह किसी व्यक्ति से करने के लिए इनकार करते हैं। जब लड़का काफी गरीब होता है या उसका कुटुम्ब अच्छा नहीं होता तब लड़की का पिता उसके साथ शादी नहीं करता उसके अतिरिक्त यदि लड़का सुस्त और रेनडियर की रक्षा करने के अयोग्य समझा जाता है तब भी अभिभावक उसके साथ शादी नहीं करते। शादी करने से जब कोई व्यक्ति निराश कर दिया जाता है तब वह बिना किसी शिकायत के शान्ति के साथ अपने घर को चला जाता है।

इस बात से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य तबतक

अपना ब्याह नहीं कर सकता जब तक कि वह इस योग्य नहीं हो जाता कि वह अपना काम आसानी से कर सके। वह अपना खेमा बना सके। रेनडियर रख सके और उसकी रक्षा सके। इसके अतिरिक्त उसके पास खाने, पीने, वस्त्र, और बर्तन इत्यादि का भी काफी प्रबन्ध हो। इन बातों पर पहले बहुत ध्यान दिया जाता था। परन्तु जब से योरूपीय सभ्यता का प्रवेश इन लोगों में होने लगा तब से लोगों का ब्याह प्रायः बहुत देर में होता है। कुछ लोग तो सम्पूर्ण जीवन अविवाहित ही बिता देते हैं यही कारण कि लैप लोगों की जन संख्या अधिक नहीं बढ़ रही है।

लैप लोग गर्भिणी स्त्रियों की अत्याधिक परवाह करते हैं। उसे वे किसी प्रकार का दुःख नहीं देते। और कोई बुरे विचारों तथा बुरी चीजों के देखने से भी दूर रखना चाहते हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि मां के विचारों का प्रभाव लड़कों पर बहुत गम्भीरता से पड़ता है।

लैप लोग लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक मानते हैं। क्योंकि लड़का ही कुटुम्ब का उत्तराधिकारी

होता है और वह पशुओं की रक्षा करता और उसकी वृद्धि करता है। लड़की भी घर के कामों में परिश्रम के साथ सहयोग देती है परन्तु उसका साथ केवल थोड़े ही समय के लिए होता है। वह तो दूसरे घर की लड़की होती है जिसका सम्बन्ध दूसरे ही घर से होता है। अतएव वह घर के गौरव और प्रतिष्ठा की वृद्धि में कोई हाथ बटा सकती। ऐसी दशा में लड़के की प्रतिष्ठा होना उन लोगों के हृदय में स्वाभाविक हो जाता है।

पुराने समय के लौप लोग लड़के के भाग्यशाली और अभाग्यशाली होने का अनुमान अपने पशुओं के आधार पर करते थे। बच्चा पैदा होने के समय यदि उनके पशुओं के ऊपर कोई आपत्ति आजाती तब वे लड़के को अभाग्य शाली समझते थे और यदि बच्चे के उत्पन्न होते समय उनके पशुओं पर कोई अच्छी घटना घटित हो गई तब वे लोग उसको भाग्यशाली समझते थे।

लड़के जब तक बोलना और चलना नहीं जानते तब तक उनका पालन पोषण माँ की गोद में और पालने में होता है। यह पालना छोटी गाड़ी की भाँति

बना होता है। यह वहां की लड़कियों से बनाया जाता है।

बच्चा जब बड़ा होता है तब वह खेलने और कूदने के लिए बाहर जाता है। वह अपना समय अधिकतर रेनडियर के झुंड के साथ भी बिताता है। वे लोग दूसरों की भांति अपनी माँ और बाप से कहानियाँ सुनने के भी इच्छुक रहते हैं। मां और बाप उन्हें अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाकर उनका मन बहलाव करते हैं। लड़कियाँ भी बाहर खेलने के लिए जाती हैं। परन्तु उनका अधिकतर सम्बन्ध घरेलू कामों से रहता है। उन्हें लड़कपन से ही बड़े बड़े कपड़ा और फराक पहनाते है जिनको स्त्रियां पहनती हैं।

लड़कों को खेलने के लिए खिलौने शायद ही कभी दिए जाते हैं। जब वे खेलने और घूमने के योग्य हो जाते है तब उनके हाथ में एक लकड़ी दे दी जाती है। इसके पश्चात् उन्हें लकड़ियों की छोटी छोटी चीजे, घास, पयाल, इत्यादि दी जाती है। यही चीजें उनके खिलाने का काम करती हैं। दो वर्ष के बच्चे को अधिकतर चाकू दिया जाता है। चाकू देने का यह मन्तव्य होता है कि

बच्चा काटने का काम तथा घुमाव फिराव का काम आरम्भ से ही सीख जावे वास्तव में वहाँ के लड़को का सबसे मनोहर खिलौना लासो या फन्दा है।

यह लड़के छोटे छोटे तम्बू बनाकर खेलते हैं। वे अपने घर से खराब वस्त्र लाते हैं उनसे वे तम्बू को बनाते हैं। इसके पश्चात् वे भी बाप तथा भी खेलते हैं। वे कहवा का बर्तन बनाते हैं। कहवा उबालते हैं और इसी प्रकार के कितने ही सुलभ खेल खेलते हैं। लड़कियां अधिकतर अपना मनोरञ्जन गुड़िया से करती हैं।

लैप लोगों में व्यभिचार प्रायः बिल्कुल ही नहीं पाया जाता। यहां पर लड़के और लड़कियों का संबन्ध भाई और बहिन की भाँति होता है यह लोग व्यभिचार की प्रथा से उस समय बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं। वैवाहिक जीवन के पहले शायद ही कहीं स्त्रियों के लड़का पैदा होते देखा जाता है।

लड़कियां २१ वर्ष पर युवावस्था को प्राप्त हुई समझी जाती है परन्तु वहाँ पर शायद ही कोई ऐसा

अवसर देखने में आया हो कि लड़की अपनी इच्छा से अपने पति को चुनतीं हो लड़कियों के हृदय में अपने अभिभावक के प्रति जो आगाध प्रेम होता है वह उन्हें दूसरे मार्ग पर जाने से रोक देता है। उन्हें अपने अभि-भावुकों पर विश्वास होता है कि वे जो कुछ करेंगे, हमारी भलाई के लिए करेगे। इसी प्रकार जब वे लड़कियाँ माँ हो जाती है तब वैसे ही अपने लड़कों के प्रति व्यवाहर करती हैं जैसा वे अपने माँ-बाप से सीखती हैं। ऐसी दशा में उनके यहाँ व्यभिचार और प्रेम के ऊपर विवाह की प्रथा का सर्वथा अभाव पाया जाता है। पहाड़ के लैपों में यह प्रथा प्रचलित है कि वे दूसरे कुटुम्ब से मिल जाते है। जब किसी अविवाहित लड़की या लड़के के पिता या माँ मर जाती है तब वे लोग दूसरे कुटुम्ब में जाकर रहने लगते हैं। दूसरे कुटुम्ब के लोग उन्हें प्रेम से अपने यहाँ रखते हैं और उनकी भरसक सहायता करते हैं।

लैपों के समाज की ईकाई उनकी जाति या गिरोह होता है; कुटुम्ब नहीं यदि कोई चाहे कि एक या दो कुटुम्ब के साथ मिळकर जीवन व्यातीत करे तो ऐसा

उसके लिए असम्भव है। इसका कारण बिल्कुल स्पष्ट है। लैपों का जीवन संकटों और तरह तरह की परेशानियों के बीच में पलता है। उन्हें जीवन में कितने ही ववन्डरों का सामना करना पड़ता है। अतएव जब तक वे सम्पूर्ण सम्बन्धियों और जातियों के साथ मिलकर नहीं रहेंगे तब तक उनको जीवन की कठिनाइयों से मुक्त हकर; जीवित रहना असम्भव है। इसी उद्देश्य से यहाँ के लड़के और लड़कियों को व्यक्तिगत जीवन के सुधार के लिए उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना उन्हें समाज में रहकर अच्छा मिलनसार सामाजिक प्राणी बनने की ओर इंगित किया जाता है। लड़कों में प्रारम्भ से ही अपने बड़ो के प्रति आदर, सत्कार तथा प्रेम की भावना का प्रचार किया जाता है।

लड़कों की शिक्षा

पहले इनकी शिक्षा का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं था सबसे पहले सन् १६०६ ईस्वी में चार्ल्स नवें ने इन बालकों की शिक्षा की ओर ध्यान दिया। परन्तु उसकी शिक्षा बहुत ही कठोरता से होती है उनकी शिक्षा का प्रबन्ध पहले पादरियों के हाथ में सौंपा गया। परन्तु

यह प्रबन्ध किसी प्रकार से लाभदायक न सिद्ध हुआ।

इसके पश्चात् उनकी शिक्षा का प्रबन्ध सन् १९१९ में दूसरे ढङ्ग से किया गया यह कोशिश बहुत कुछ सफल रही। सबसे पहले लोकसेल नामक स्थान पर एक स्कूल खोला गया। उसमें लूथर की पुस्तक का कुछ अनुवाद लैपों की ग्रामीण भाषा में किया गया और उसी के अनुसार लड़कों की शिक्षा का क्रम भी स्थापित किया गया। इस स्कूल में कुछ बड़ी उम्र के भी लोग शिक्षित किए जाते थे। उन लोगों को वहाँ पर रहना पड़ता था! उनके खाने पीने का भी प्रबन्ध वहीं रहता था। उन्हें प्रातः उठकर प्रार्थना करनी पड़ती थी। उनकी सम्पूर्ण शिक्षा पाँच वर्ष में पूरी होती थी। उन्हे सारी शिक्षाओं को स्वीडन की भाषा में जबानी स्मरण करना पड़ता था इसके पश्चात् उन्हें लैटिन और ग्रिक सीखनी पड़ती थी। इसके लिखने और पढ़ने के साथ साथ उन्हें गणित सीखना आवश्यक था। परन्तु कोई रचनात्मक शिक्षा उन्हें नहीं दी जाती थी।

यह स्पष्ट है कि ऐसे स्कूलों से लैप लड़कों को लाभ नहीं होने वाला था। ऐसी शिक्षा उन बालकों की

प्रकृति के भी विरुद्ध थी। अतएव वे उस शिक्षा को अच्छी तरह न ग्रहण कर पाते थे और न उन्हें उस शिक्षा से कोई प्रेम था। परन्तु इस बात से स्कूल के अध्यापक अनभिज्ञ थे। लड़कों को पाठ याद न होने या बहाना करने पर अध्यापकों के बेतों का शिकार होना पड़ता था। यह परेशानी न केवल एक या दो लैप को थी वरन् समस्त लैप के बालकों को थी। ऐसी दशा में उन लड़कों के अभिभावुकों ने आपस में सलाह की और उन्हें उस स्कूल की शिक्षा से वंचित रखने के लिए कटिबद्ध हो गए। अब लड़कों को जबरदस्ती स्कूल जाने के लिए बाध्य करना अधिकारियों के लिए असम्भव हो गया।

लैपों की शिक्षा में १६वीं शताब्दी तक कुछ न कुछ सुधार होता रहा। पहले उनको शिक्षा ईसाई धर्म के प्रचार की ओर सीमित थी। परन्तु अब उसका प्रेम बढ़ने लगा और स्कूलों का सुधार नए ढङ्ग से होने लगा।

सबसे पहले स्वीडन में विशेष कर लैप लड़कों के लिए ही स्कूल खोला गया इसकी शिक्षा बहुत कुछ उनके जीवन के अनुकूल थी। इस शिक्षा में पहली

शिक्षा के अनुसार लड़कों को भूखे पेट पाठ याद करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता था इसके सभी लड़कों को यह सुविधा प्रदान की गई कि लड़के अपनी इच्छा से जो चाहे सीख सकते हैं। वे अपने इच्छानुसार कोई भी विषय पढ़ सकते हैं। उन्हें रेनडियर पालने के ढंग भी बाद में बताए जाने लगे।

इसी प्रकार धीरे धीरे उनकी शिक्षा का प्रचार बढ़ने लगा आधुनिक समय में लैप लोग अपने लड़कों को झोंपड़ी में पढ़ने के लिए भेजते हैं। उन्हें पढ़ने के साथ साथ रचनात्मक कार्यों की ओर अधिक लगाया जाता है। उन्हें रेनडियर के पालने, तथा अपने घरेलू उद्योग धन्धो की ओर ध्यान देने की शिक्षा दी जाती है। उन्हें सामाजिक प्राणी बनने और समाज में रहकर सभ्यता से लोगो के साथ पेश आने की ओर अधिक लगाया जाता है क्योंकि लैप लोग समझते है कि पढ़ने लिखने से यह चीजें उनके जीवन के लिए अधिक उपयोगी हैं।

स्कूल के लड़कों और लड़कियों को खेलने, कूदने की भी पूर्ण स्वतन्त्रता होती हैं। उनका खेल भी उनकी

परिस्थिति के अनुकूल ही होता है। उन लड़कों और लड़कियों में कुछ लोग रेनडियर बन जाते हैं, कुछ कुत्ते रेनडियरों को कुछ लोग पालते हैं। कुछ कुत्ते बन कर उनका पीछा करते हैं। लड़के कभी कभी चाकू लेकर रेनडियरों का पीछा करते हैं। जब कोई लड़की पकड़ी जाती है तब वह चाकू देखकर डरने लगती है। उसी डर में वह रोने लगती है तब सब लड़के हँस पड़ते हैं और कहते हैं कि लड़की रेनडियर के साथ वे अब कभी खेल न खेलेंगे। लड़के लड़कियों को कभी मारते नहीं हैं।

इस प्रकार लड़कों का खेल भी उन्हें गम्भीर कार्यों की शिक्षा देता है। लड़के खेल ही में रेनडियर पालने और लड़कियाँ अच्छी गृहणी बनने के नियमों को खेल ही में सीख जाती हैं।

लैपों का स्थाई जीवन

कुछ दिन पहले स्वीडन का राज्य इन लैपों को सभ्य बनाने केलिए प्रयत्न शील हो गया था। उसने सोचा

इन्हें सभ्य बनाया जाय और उन्हें उनके कठिन जीवन से मुक्त किया जाय। ऐसा करने में राज्य को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़े। लैप लोग भी अपने जंगली जीवन से मुक्त होकर, जंगलों, पहाड़ों और पर्वत मालाओं की कठिनाइयों से छूट कर सरल और आनन्द का जीवन व्यतीत करने के लिए उत्सुक हो गये। बूढ़े लैपों के सामने सभ्यता का अर्थ आराम, सुस्ती और सरल जीवन के अतिरिक्त और कुछ न था। उन बहुत से लैपों ने स्थायी होकर रहना प्रारंभ कर दिया। वे राज्य के नागरिक बन गए और उन्होंने राज्य के अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करना आरंभ कर दिया। वे राष्ट्र को एक निश्चित कर देने लगे और राजा की आज्ञाओं पर निर्भर रहने लगे।

परन्तु थोड़े ही दिनों के पश्चात् इसका हानिकारक परिणाम राज्य को मालूम होने लगा। लैपों के लड़के सुस्त और उद्योगहीन हो गए। वे नवीन स्थिति में अपने को अच्छी तरह से न सम्भाल सके। उन्हें आलस्य और काहिली ने घेर लिया। वे कमजोर हो गये। उन्हे

सिनेमा और शराब अधिक अच्छी मालूम होने लगी। उन्हें रेनडियर के साथ रहने में घृणा होने लगी। इसके अतिरिक्त उन्हें जंगलों, पर्वतों तथा घाटियों का जीवन अत्यन्त फीका मालूम होने लगा।

इसके परिणाम स्वरूप रेनडियर का पालना दिन प्रति दिन कम होने लगा। अब राज्य को अपनी नीति का कुपरिणाम मालूम होने लगा। उसने सोचा कि लैपों के स्थाई जीवन से कृषि में थोड़ा बहुत सुधार तो अवश्य हुआ है परन्तु उससे रेनडियर के पालने में जो कमी हुई है उसकी क्षति इस कृषि से कभी नहीं पूरी हो सकती। ऐसी दशा में उसने लैपों को रेनडियर पालने की स्वतन्त्रता दे दी और उन्हें राज्य की ओर से अधिक से अधिक सहायता देने का वचन दिया।

राज्य ने चरागाह का कानून फिर से लागू किया रेनडियर पालने वालों के टैक्स को बहुत कम कर दिया और उनके साथ विशेष पक्ष किया जाने लगा आजकल केवल स्वीडन में कुल मिलाकर २५०,००० रेनडियर हैं। राज्य प्रतिवर्ष बहुत से रेनडियर स्वयं खरीद लेता है। वह उन्हें बाहर भेजता है। वह उनके मांस,

चर्बी, तथा बाल को भी तैयार करके संसार के समस्त देशों में भेजता है। इस प्रकार रेनडियर राज्य की एक विशेष सम्पत्ति है। वह राज्य की आर्थिक उन्नति में बहुत सहायता देता है।

राज्य ने अपनी ओर से लैपों को इतनी अधिक सुविधा दे दी है कि अब उन्हें राज्य के विरुद्ध किसी प्रकार का कार्य करने का अवसर नहीं है। फिर भी यह न समझ लेना चाहिए कि अभी उनका मार्ग बिल्कुल साफ हो गया है। अब भी उनके सामने बहुत सी कठिनाइयां हैं जब रेनडियर खेत में आ जाते हैं तब किसान उन्हें बुरी तरह से फटकारता है। किसानों के शिकारी कुत्ते भी होते हैं जो अवसर पाकर उन्हें मार डालते हैं। इसके अतिरिक्त सभ्यता के विकास ने, रेलों, मोटरों की आवाज में रेनडियर पालने में असुविधा पैदा कर दी है। इसी स्थिति में लैपों को निराश होकर बहुत ही सीमित स्थान में रहना पड़ता है जो रेनडियर पालने के लिए काफी नहीं है। इन छोटे छोटे स्थानों पर रेनडियर के खाने का भी उचित प्रबन्ध नहीं हो पाता।

अभी तक केवल वहीं लोगों की पहुंच के बाहर हैं

जहाँ पर खतरे और परेशानियाँ अधिक हैं। उन स्थानों पर लैप लोगों का जीवन पहले ही की भाँति स्वतन्त्रता पूर्वक कठिनाइयों के बीच व्यतीत होता है। इनका जीवन पर्वत से जंगल और जंगल से पर्वत पर चढ़ने और उतरने में बीतता है। परन्तु जब लैप लोग मैदान में आते हैं तब उनके कृषकों से झगड़ा होना आवश्यक हो जाता है क्योंकि उनके रेनडियर कृषकों के खेतमें पड़ जाते है। इसके अतिरिक्त जब वे कोई पेड़ गिराते हैं जो उनके अधिकार में नहीं है तब भी झगड़ा पैदा हो जाता है। राज्य इनके झगड़ों को सुलझाने का भरसक प्रयत्न करता है परन्तु फिर भी झगड़े हो ही जाते हैं।

कुछ भी हो, लैप लोग अपनी शक्ति के अनुसार अत्यधिक परिश्रम करते है। वह शान्ति का जीवन नहीं चाहते इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे लोग अपनी स्वतन्त्र इच्छा नहीं रखते। वे स्वतन्त्रता के उतने ही प्रेमी है जितना हम लोग। उनका जातीय गौरव रूढ़ि पर ही नहीं निर्भर है। वे अपने जीवन को अपनी स्वतन्त्र बुद्धि से बिताते हैं। यह उनका स्वभाव है कि जब कभी भी उनके ऊपर कोई आपत्ति आती है या उन्हें राज्य की ओर से कोई

शिकायत होती है तब वे सीधे राजा के पास पहुँचते हैं। उनका बीच के अधिकारियों पर विश्वास नहीं होता।

क्या ही अच्छा हो कि लैप लोग वही चीजें नई सभ्यता से लेते जो उनके लिए आवश्यक है। वे बहादुरी के साथ अपनी स्वतन्त्रता को स्थायी रखते अपने झुंड से साथ पर्वतों पहाड़ियों और जंगलों में भ्रमण करें; अपने रेनडियर के साथ सुख का जीवन अनुभव करें, यही उनके जीवन को अधिक शोभा देता है। क्योंकि एक सच्चा लैप तभी अपने जीवन में आनन्द का अनुभव करता है जब वह अपने को पर्वतों और जंगलों के उन्मुक्त वातवारण में पाता है। उसके अशान्ति की सीमा तक नहीं रहती जब स्वछन्द हवा उसे अपनी स्निग्धता से वंचित कर देती है। वास्तव में न केवल रेनडियर वरन् लैप भी बसन्त के सूर्य की गर्म किरणों से बेचैनी का अनुभव करने लगता है। वह शीघ्र से शीघ्र पर्वत की कठोर जीवन के लिए लालाइत हो उठता है। आराम का जीवन उसे पसन्द नहीं। जब वह अपनी स्त्री, बच्चों और समस्त गृहस्थी के सामान के साथ पर्वतीय जीवन व्यतीत करने के लिए, मधुर गाना गाता हुआ बाहर निकलता है उस समय उसका जीवन अनुकरणीय हो जाता है। प्रकृति से युद्ध करने की वीरता और उत्साह उसके हृदय में उसी समय दिखाई पड़ता है। वास्तव में इसी समय वह कठिन जीवन व्यतीत करने का महारथी समझा जाता है।